नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

'गांधीजी एवं भारतीय भाषाओं' पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन

भाषा में न्याय, संस्कार, नवोन्मेष की निरंतरता जरूरी : प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल

वर्धा, दि. 24 जनवरी 2020 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल ने कहा है कि जिस भाषा में न्याय, संस्कार और नवोन्मेष की निरंतरता हो वही भाषा चलती रहेगी। कोई भी भाषा अत्यंत सरल और कठिन नहीं होती अपितु शब्द संसार का परिचय और निरंतर प्रयोग से भाषा का सरल और कठिन होना निर्भर

करता है। उन्होंने कहा कि सहजता से मातृभाषा ही सीखी जा सकती है। प्रो. शुक्ल गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग एवं गांधी स्मृति एवं दर्शन समिति, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के समापन समारोह की अध्यक्षता करते हुए अपने विचार रख रहे थे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी का समापन शुक्रवार 24 जनवरी को गालिब सभागार में किया गया। इस अवसर पर मंच पर प्रतिकुलपति द्वय प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल, प्रो. चंद्रकांत एस. रागीट, संस्कृति विद्यापीठ के अधिष्ठाता एवं कार्यक्रम के समन्वयक प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ. राकेश मिश्र ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन प्रो. नृपेंद्र प्रसाद मोदी ने प्रस्तुत किया।

कुलपति प्रो. शुक्ल ने कहा कि गांधी की दृष्टि में केवल हिंदी ही राष्ट्रभाषा नहीं है। वे भाषिक बहुलता को स्वीकार करते थे। भाषा का प्रश्न जन और मन का प्रश्न है और वह स्वाभिमान के जागरण का प्रश्न है। उनका कहना था कि हमें समाविष्ट करने वाली भाषा

चाहिए। उन्होंने कहा कि भाषा के मोर्चे पर गांधी श्रम, समय और मेधा को बचाने के पक्षधर थे । प्रो. शुक्ल ने संविधान सभा का उल्लेख करते हुए कहा कि डॉ. बाबासाहब भीमराव अंबेडकर ने राष्ट्रभाषा के रूप में संस्कृत भाषा का पक्ष लिया था । उनके नेतृत्व में भारत के लिए विज्ञान और तकनीक की भाषा के रूप में किस भाषा का चयन किया जाए, यह प्रश्न आया तब उन्होंने संस्कृत भाषा को अपनाने की बात कही थी।

प्रतिकुलपति प्रो. हनुमानप्रसाद शुक्ल ने उदबोधन में कहा कि गांधी की भाषा देश की भाषा थी जिसे हम हिंदुस्तानी भी कह सकते हैं। प्रो. शुक्ल ने गांधी की भाषा दृष्टि और स्वराज और स्वराष्ट्र पर विचार रखते हुए कहा कि हमें भारतीय भाषाओं में व्यक्त होना चाहिए। संगोष्ठी की संक्षिप्त रिपोर्ट शोधार्थी मोहन मिश्र ने प्रस्तुत की।

समापन समारोह में अध्यापक, प्रतिनिधि, शोधार्थी और विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।